कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937

टमाटर के प्रमुख रस चूसक कीट एवं उनका प्रबंधन

डा. राकेश कुमार

ए. टी. सी. मलिकपुर, भरतपुर

*संबंधित लेखक: rakeshcsa8328@gmail.com

परिचय

हमारे देश में उगायी जाने वाजी सब्जीयों में टमाटर का प्रमुख स्थान हैं। टमाटर में विटामिन ए एवं सी की मात्रा होती है। इसका उपयोग ताजा फल के रूप में या उन्हें पकाकर डिब्बा बंदी करके अचार, चटनी, सूप, केचप, सॉस व अन्य सब्जियों के

e-ISSN No. 2583-0937

साथ पकाकर भी किया जाता है। इस फसल के उत्पादन एवं उत्पादकता को बहुत से कारक प्रभावित करते है जिनमें रस चूसने वाले नाशीकीट प्रमुख है। ये कीट टमाटर की फसल को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुँचाते है। इन रस चूसने वाले कीटों में सफेद मक्खी, हरा तेला, पर्णजीवी (थ्रिप्स) व मोयला (चेंपा) प्रमुख है।

1. सफेद मक्खी

पहचान के लक्षण

सफेद मक्खी के वयस्क दूधिया सफेद/हल्का पीले रंग का होता है। पंख सफेद, जूँ की तरह होते हैं। इनके शिशु सुस्त व धीमें चलने वाले होते है, जो पत्ति के नीचे झुण्ड में मिलते है।

नुकसान की प्रकृति

वयस्क व निम्फ/शिशु पत्तियों का रस चूसकर उनको कमजोर बना देते है। जिनके कारण पत्तियाँ मुड़कर सूख जाती है। जिससे पौधे बीमार सा दिखाई देता है। वयस्क कीट फसल में पर्ण कुंचन बीमारी का वायरस फैलाने का काम करता है।

जीवनचक्र

यह कीट पूरे वर्ष प्रजनन करता है। मादा पत्ती के नीचे एक-एक कर के पीले रंग के अण्डे देती है। जिनसे 3 से 13 दिन में शिशु निकलते है। शिशु अवस्था 9 से 10 दिन की होती है। कीट का पूरा जीवन चक्र 14 से 22 दिन में पूरा हो जाता है व वर्ष में 12 पीढियाँ पाई जाती है।

2. पर्णजीवी (थ्रिप्स)

पहचान के लक्षण

वयस्क कीट स्लेंडरनुमा, पीलापन लिये हुये भूरे रंग का होता है निम्फ/शिशु छोटे पंख रहित, लेकिन रंग एवंआकार में वयस्क से मिलते जुलते होते है। मादा के पंख नर की अपेक्षा कम चौड़े होते है। यह कीट टमाटर के अलावा कपास, प्याज, अदरक व आलू को भी नुकसान पहुँचाता है।

e-ISSN No. 2583-0937

नुकसान की प्रकृति

वयस्क व शिशु दोनों की पत्तियों को खुरचकर निकलने वाले रस को चूसते है। अधिक प्रकोप की अवस्था में पत्तियाँ मुड़ जाती है, पौधों की बढ़वार रूक जाती है, पौधा झुलसा हुआ नजर आता है तथा कभी-कभी पौधे सूख भी जाते है।

जीवनचक्र

यह कीट वर्ष भर पाया जाता है। वयस्क मादा पौधे के हरे भागों पर किड़नी के आकार के अण्डे एक-एक करके देती है। अण्डों से उसे 8 दिन में निम्फ (शिशु) निकलते है व नुकसान पहुँचाते रहते है। सर्दी का मौसम यह कीट व्यस्क अवस्था में गुजराता है। एक वर्ष में इस कीट की अनेक पीडियाँ पाई जाती है।

3. हरा तेला

पहचान के लक्षण

छोटे हरे रंग के हॉपर, शिशु व वयस्क पत्तियों की निचली सतह पर पाये जाते है।आगे के पंख के पिछले भाग में एक बिन्दु सा होता है। शिशु बहुधा हरे रंग के होते है, वयस्क कीट 3 मिमी लम्बा होता है। यह टमाटर के अलावा कपास भिण्डी, आलू, बैंगन व जंगली पौधों को नुकसान पहुँचाता है।

नुकसान की प्रकृति

वयस्क कीट एवं शिशु पत्तियों से रस चूसते रहते है। जिसके फलस्वरूप पत्तियाँ पीली पड़कर मुड़ जाती है। अधिक प्रकोप की अवस्था में पत्तियाँ लाली लिये भूरे रंग में बदल जाती है। ज्यादा प्रकोप की अवस्था

e-ISSN No. 2583-0937

में पत्तियाँ सूख जाती है एव नीचे गिर जाती है, पौधों की बढ़वार रूक जाती है।

जीवन चक्र

यह कीट पूरे साल पाया जाता है, मादा पीले रंग के अण्डे पतियों के नीचे की शिराओं पर देती है।अण्डों से 4 से 11 दिन में शिशु निकलते है एवं ये 7 से 21 दिन पत्तियों से ही रस चूसते रहते है। ये कीट हमेशा पत्तियों के निचली सतह पर बैठे देखे जा सकते है।

4. मोयला (चेंपा)

पहचान के लक्षण

वयस्क कीट हल्के हरे रंग के होते है। कीट की पंख वाली अवस्था मे इसका रंग भूरा होता है। यह टमाटर के अलावा कपास, मिर्च व आलू आदि को नुकसान पहुँचाता है।

नुकसान की प्रकृति

वयस्क एवं शिशु दोनों ही पौधों से रस चूसते है। जिससे पौधा कमजोर हो जाता है एवं बढ़वार रूक जाती है। कोमल शाखाओं एवं पत्तियों का रंग फीका पड़ जाता है। पत्तियाँ पीली पड़कर मुरझा जाती है तथा अधिक प्रकोप की अवस्था में झुलसी नजर आती है।

जीवनचक्र

यह कीट पंख वाली एवं बिना पंख वाली दोनों ही अवस्थाओं में अनिषेक प्रजनन करते है। मादा 20 से 50 शिशु को जन्म देती है। इसकी प्रजनन अवधि 2 सप्ताह है। शिशु अवस्था मौसम के अनुसार 3 से 20 दिन की होती है। व्यस्क होने से पूर्व कीट चार बार अवस्थायें बदलता है।

e-ISSN No. 2583-0937

चेंपा

प्रबंधन

- खेतों के आस-पास घास व पेड़ पौधों को नष्ट कर देना चाहिये।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करे।
- कीटों के प्रकोप को सहन करने वाली जातियों का प्रयोग करना चाहिए।
- चिपचिपे प्रपंच 10-12 प्रति हैक्टेयर की दर से लगावे। इस प्रकार के प्रंपच पर गोद जैसा चिपचिपा पदार्थ लगा होता है।
- नत्रजन उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा ही कम में लेवें।
- आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- इनके नियंत्रण हेतु मेलाथियान (50 ई.सी.) के 1 मि.ली./लीटर पानी में छोलकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन पर छिड़काव दोहरावें।
- इमिडाक्लोपरिड(17.8 एस. एल.) के 0.25 मि.ली./लीटर पानी में छोलकर छिड़काव करें।
- बुवाई से पूर्व कार्बोफ्यूरान 3 जी की 8 से 10 ग्राम मात्रा/मीटर के हिसाब से भूमि में मिलावें।